International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 03, No. 02(II), April - June, 2021, pp.89-92

ललित कलाएं और वर्तमान चुनौतियाँः संगीत के संदर्भ में

डॉ. प्रभा माथुर*

प्रस्तावना

भारतीय दर्शन में कला को ईश्वर प्रदत्त माना गया है। किन्तु हर मनुष्य प्रकृति से प्रभावित होता है और अपने मन की अनुभूति को कला के माध्यम से अभिव्यक्त करना चाहता है। कला मनुष्य को विकसित करती है। कला संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग है। कला समाज का प्रतिबिम्ब है। जहाँ जीवन है वही समाज है और जहाँ समाज है वहीं ललित कलाऐं हैं। अतः ललित कलाओं का समाज से गहरा नाता है। चाहे कोई सा भी युग हो, ललित कलाओं का अस्तित्व समाज में हमेशा मौजूद रहा है। ललित कलाएं समाज से और समाज ललित कलाओं से प्रभावित हुए हैं। जिस प्रकार सूर्य की रौशनी एवं फूलों की खुशबू को नहीं बांधा जा सकता, उसी प्रकार कलाओं के अविरल प्रवाह को भी नहीं रोका जा सकता।

हमारे शास्त्रों में 64 कलाओं का वर्णन मिलता है। इन्हीं में से पाँच मुख्य ललित कलाएं हैं।

- संगीत कला
- चित्रकला
- काव्य कला
- मूर्ति कला
- स्थापत्य कला

इन्हीं ललित कलाओं में 9 रस एवं 33 संचारी भाव बताए गए हैं। कला एकवचन होते हुए भी बहुवचन है। इसमें आपस में अन्तर सम्बन्ध है। हम यहाँ यह कह सकते हैं, संगीत का इतिहास तो बहुत पुराना है। प्रारम्भ में यह कला के रूप में नहीं थी। कलाकार उच्चारण करने से पहले एक बहुत लम्बा युग, जिसे हम प्राग संगीत युग कहते हैं, अवश्य रहा होगा। जिसमें प्रकृति की ध्वनियों को लय में बांधने का प्रयास किया गया होगा।

ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाए तो भारतीय संगीत का इतिहास हमें वैदिक काल से ही मिलता है। उस समय संगीत की दो धाराएं मिलती थीं।

- देशी संगीत
- मार्गी संगीत।

उस समय संगीत अध्यात्म से जुड़ा हुआ था। युगानुसार संगीत में परिवर्तन होने के साथ–साथ मुगल काल संगीत का स्वर्ण युग कहा जा सकता है। इस काल में संगीत को राज्य आश्रय प्राप्त होने के कारण संगीत राजदरबारों (गुनीजनखानों) में फला फूला। तत्कालीन समय में कलाकारों को अपनी जीविकोपार्जन की चिंता नहीं थी। उनके एवं उनके परिवार का ध्यान दरबार द्वारा रखा जाता था एवं कलाकार तो केवल अपनी कला साधना

* सहायक आचार्य, संगीत कंठ, राजस्थान संगीत संस्थान, जयपुर, राजस्थान।

में लगा रहता था। यही कारण था कि संगीत में विभिन्न घरानों का जन्म हुआ। यह घराने संगीत की तीनों विधाओं गायन, वादन एवं नृत्य में फला फूला एवं इन्हीं घरानों में अनेक उच्च कोटि के कलाकारों का उदय हुआ। आज इस घराना परम्परा का निर्वाह पूर्णरूपेण नहीं हो पा रहा है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद गुरुकुल के पश्चात संगीत शिक्षण संस्थाओं में आया और यहीं से संगीत के क्षेत्र में अनेक चुनौतियों ने जन्म लिया। चुनौतियाँ तो हर काल में रही हैं और रहेंगी। किन्तु वर्तमान समय में प्रमुख चुनौतियां निम्नानुसार हैं –

- **गुरु शिष्य परम्परा का समाप्त होना**

भारतीय संगीत में गुरु शिष्य परम्परा आदि काल से मान्यता प्राप्त है, गुरु की महिमा के अनेक उदाहरण हमें मिलते हैं। गुरु का स्थान देवताओं से भी ऊपर बताया गया है। जैसे

गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागू पाय।
बलिहारी गुरु आपणी, जिन गोविन्द दियो बताए।

गुरु शिष्य परम्परा का व्याकरणगत अर्थ है – अविच्छिन, श्रृंखल, नियमित वंश, कुटुम्ब, कुल। कर्ण परम्परा का अर्थ है – दीक्षा एक कान से सुनकर दूसरे कान से सीखना गुरु शिष्य परम्परा है। नियमित परम्परा के क्रम से ज्ञान प्राप्त होना और गुरु शिष्य परम्परा का निर्वाह भारत में शिक्षा की हर विधा में है, जिसकी पूर्णांग शिक्षा आज भी गुरु शिष्य परम्परा के माध्यम से ही सम्भव है।

आज की विद्यालयीन शिक्षा प्रणाली में गुरु शिष्य परम्परा का पूर्ण रूप से समाप्त होने के कारण संगीत शिक्षण की जो स्थिति है वह बहुत सन्तोषजनक नहीं है क्योंकि यहाँ शिक्षण व्यवस्था व्यक्तिपरक ना होकर सामूहिक है। आज विद्यालयों की शिक्षा प्रणाली में शिक्षण क्रम के तीन स्तर हैं पाठ्यक्रम, पाठ्य पुस्तकें और परीक्षा। यह स्तर चाहे गुरुकुल में हो या विद्यालयों में हो, ये अत्यन्त आवश्यक है, अन्तर इतना है कि यह तीनों क्रम गुरु की इच्छा पर निर्भर करते हैं जबकि सामान्य विद्यालयों में या संगीत शालाओ में यह क्रम पूर्व निर्धारित होते हैं। विद्यालयों में पाठ्यक्रम के दायरे में रहना शिक्षक के लिए आवश्यक होता है जबकि गुरुकुल में ऐसा नहीं होता था।

विश्वविद्यालय स्तर पर भी दो प्रकार की शिक्षा व्यवस्था होनी चाहिए। शास्त्र तथा प्रायोगिक शिक्षा। यह एक दूसरे के पूरक हैं – शास्त्र पक्ष की शिक्षा विश्वविद्यालयों के विभागों में दी जानी चाहिए और प्रायोगिक पक्ष की शिक्षा संगीत संस्थानों एवं गुरुकुल में गुरु शिष्य परम्परानुसार दी जानी चाहिए, यदि विश्वविद्यालयों में भी उच्च कोटि के कलाकार हैं तो वे भी गुरु शिष्य परम्परा अनुसार छात्र छात्राओं को प्रायोगिक पक्ष की शिक्षा दे सकते हैं, जिससे विद्यार्थियों का शास्त्र पक्ष व प्रायोगिक पक्ष मजबूत हो सके।

- **संगीत एवं ललित कलाओं को अन्य विषयों के समान समझा जाना**

संगीत एक साधना का विषय है। यह अन्य विषयों से भिन्न है, क्योंकि अन्य विषय जैसे इतिहास, राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र आदि विषय केवल स्मरण करके ही पढ़े जा सकते हैं, जबकि संगीत विषय में स्मर्ण के साथ साधना और अभ्यास का भी अत्यधिक महत्व है। इस विषय के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को पहले साधक होना पड़ता है और इसके पश्चात संगीत की वास्तविक शिक्षा सम्भव है। जिन संस्थाओं के प्रधान संगीत के क्षेत्र के नही होते वे विद्यार्थियों व शिक्षकों के अभ्यास व साधना पर महत्व नहीं दे पाते, ऐसे में वहाँ के विद्यार्थी संगीत की शिक्षा में पिछड़ जाते हैं, क्योंकि संगीत विषय की प्रकृति अन्य विषयों से भिन्न है। आज हमारे सामने एक यह भी चूनौति है जिन संगीत शिक्षण संस्थाओं में वहॉ प्रधान किसी अन्य विषय से संबंधित होते है वे सेगीत विषय की बारिकियों को नही समझ पाते है!

यह अत्यन्त गम्भीर बात है कि आज स्कूल या कॉलेज में संगीत अनिवार्य विषय के रूप में तो है लेकिन संगीत शिक्षण का उद्देश्य हमारे देश को अभी तक समझ में नहीं आया है और न ही नीति निर्धारण कमेटी ने अभी तक कोई ऐसा निर्णय लिया है जो संगीत शिक्षण के स्तर को उनकी सतह से ऊपर उठा सके।

- **सामान्य शिक्षण संस्थाओं में कला शिक्षा के अनुरूप कार्य प्रणाली का ना होना**

आज हम देखते हैं कि महाविद्यालयों में और विश्वविद्यालयों में संगीत के शिक्षकों को अन्य विषय के समान ही समझा जाता है और संस्थाओं की सामान्य कार्यालयों की गतिविधियों का कार्य भी दे दिया जाता है, जिससे उनका ध्यान विद्यार्थियों के साथ साधना–रत नहीं रह पाता और अन्य कार्यो में उसे लगना पड़ता है। सामान्य संस्थाओं के प्रमुख को यह पता ही नहीं होता कि कला के शिक्षकों को एकाग्रता के साथ साधना–रत विद्यार्थियों के साथ गुरु का होना अति आवश्यक होता है।

यहाँ तक देखा गया है कि सामान्य शिक्षण संस्थाओं में तो संगीत के शिक्षकों को अन्य विषयों के शिक्षकों की तुलना में कम वेतन दिया जाता है और अक्सर उन्हें गायन वादन व तबला संगत का कार्य भी स्वयं ही करना पड़ता है। अतः वे भी विद्यार्थियों के साथ प्राकृत शिक्षा के लिए उचित समय नहीं दे पाते। संगत का कार्य शिक्षक के अतिरिक्त किसी अन्य के द्वारा किया जाना चाहिए तभी उचित अध्ययन, अध्यापन सम्भव है।

- **कला और कलाकार को संरक्षण नहीं मिलना**

आज हमें कला और शास्त्रीय संगीत की इस परम्परा को जीवित रखना है तो सरकार व निजी संस्थाओं को कला और कलाकारों को संरक्षण देने के विषय को गंभीरता से लेना होगा। जिससे कला का संवर्धन हो सके और हमारी कला व संस्कृति पल्लवित हो सके। एक कलाकार जभी कला का विकास कर सकता है जब वह अपनी जीविकोपार्जन के लिए निशचिंत हो और उसे संरक्षण प्राप्त हो।

- **संगीत के पाठ्यक्रमों में समय की मांग के अनुसार नवीन पाठ्यक्रमों को जोड़ा जाना**

जिस प्रकार अन्य विषयों में समय–समय पर पाठ्यक्रम समयानुसार बदलता है उसी प्रकार हमारे संगीत में भी जो लोग रुचि रखते हैं और कला का प्रदर्शन नहीं कर पाते लेकिन कला के क्षेत्र में रहना चाहते हैं उनके लिए सर्टिफिकेट कोर्स जोड़े जाने चाहिए जिससे इस विषय में रचनात्मकता के साथ–साथ बच्चा लक्ष्य को प्राप्त कर सके इनमें कुछ सर्टिफिकेट कोर्स निम्नानुसार हैं :

- संगीत रिकॉर्डिंग
- आर्ट एप्रिसिएशन
- संगीत विज्ञापन
- संगीत समीक्षक
- संगीत आयोजक
- संगीत मार्केटिंग
- संगीत पत्रकारिता

आदि जैसे रोजगार उन्मुख पाठ्यक्रम का निर्माण किया जाना चाहिए, जिससे विद्यार्थी अपना जीवन यापन कर संगीत में सृजनात्मक कार्य कर सकें। आज के भौतिक युग को देखते हुए संगीत शिक्षा क्रिया परक ना होकर व्यवसायिक भी होनी चाहिए।

- **कलाकारों का आर्थिक संकटों का सामना करना**

आज का युग स्पर्धा और प्रतिस्पर्धा का युग है। इसमें वैचारिक, आर्थिक, वैज्ञानिक मानदंड या धरातल खोजने की ललकार है। प्रत्येक कलाकार किसी भी कार्य को करते समय सभी अनुकूल अर्थ लाभ और वैज्ञानिक आधार पर उचित ठहराना चाहता है।

हमारे महापुरुषों ने कला के विषय में कहा है – पंडित रविन्द्र नाथ टैगोर ने कहा है कि बिना प्रयोजन का आनन्द कला है। महात्मा गांधी ने कहा है – कला हृदय का विषय है इसमें रुपयों की बात नहीं आनी चाहिए।

साथ ही यह भी कहा है कि कला उपभोग की वस्तु नहीं है, इसे अर्थ के साथ नहीं जोड़ा जाना चाहिए। यह सभी कुछ बातें तो कला के विषय में सही है पर इस भौतिक युग में कलाकार को भी जीविकोपार्जन के लिए अर्थ बहुत महत्वपूर्ण है। बिना अर्थ के तो कला व कलाकार दोनों का ही समृद्ध होना असम्भव है।

आज हम देख रहे हैं कि उच्च कोटि के कई कलाकार चाहे वह शास्त्रीय संगीत के हों या लोक संगीत के हों उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है और वे कला को जीवित रखने के लिए जूझ रहे हैं। इन कलाकारों को सरकार से सम्मान व आर्थिक सहायता मिलनी चाहिए। जिससे वे अपनी सांस्कृतिक विरासत एवं कलाओं को जीवित रख सकें।

साथ ही स्थापित कलाकार जो आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ हैं उनको एक ऐसे ट्रस्ट का निर्माण करना चाहिए कि ऐसा कलाकार जो समय के अनुसार अपनी कला का प्रदर्शन कर पैसा नहीं कमा सकते, उन्हें कठिन समय में आर्थिक सहायता दे सके। जिससे ढ़लती उम्र या स्वास्थ्य के कारण असहाय होने पर वे अपना जीवनयापन कर सकें।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि कलाओं के क्षेत्र में चुनौतियाँ तो हमेशा ही युगानुसार रही हैं और रहेंगी। परन्तु चुनौतियाँ ही विकास का द्योतक हैं। एक अच्छे कलाकार को अपनी कला को ऊपर उठाने के लिए चुनौतियाँ स्वीकार करके ही वह नये आयाम बना सकता है।

❖◆❖